महाश्रमण जी की सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा के समापन समारोह कार्यक्रम में माननीय लोकसभा अध्यक्ष का सम्बोधन

- परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की ऐतिहासिक सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा के समापन समारोह कार्यक्रम में सम्मिलित होना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। आचार्य श्री महाश्रमण जी को मेरा विनीत नमन।

- आज के दिन उस ऐतिहासिक सप्तवर्षीय यात्रा का समापन हो रहा है, जिसे आचार्य श्री ने 9 नवंबर, 2014 को भारत की राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से आरंभ किया था।

- आपने अपनी इस यात्रा के क्रम में भारत के विभिन्न राज्यों की पदयात्रा की। भारत ही नहीं, बल्कि भूटान और नेपाल में भी आपने लगभग 20 हजार किलोमीटर की पदयात्रा की और देश के हजारों लाखों गांवों, कस्बों और शहरों के लोगों से सीधा संपर्क किया, उन्हें सदाचार और नैतिकता को धारण करने तथा नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई।

- अपने व्यक्तित्व तथा कार्यों से आचार्य महाश्रमण ने मानव चेतना के हर पहलू को प्रकाशमान किया है। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके विचारों से अछूता रहा हो।

- उन्होंने जहाँ योग, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डाला, वहीं विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति जैसे अनेक विषयों पर भी जीवन-दृष्टि प्रदत्त की है।

- महात्मा गांधी जी ने जिस सदाचार और नैतिकता की बात कही है, आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिक्षाओं ने हमेशा ही उस सदाचार और नैतिकता को पोषित किया है।

- आचार्य श्री महान जैन धर्म तथा अपने महान गुरुओं की शिक्षाओं को निरंतर आगे बढ़ाते हुए मानव जाति की उत्तम सेवा का कार्य कर रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने के साथ-साथ उसे पूरे संसार के साथ साझा करने और विश्व को सन्मार्ग दिखाने के लिए आपके प्रयास अत्यंत उल्लेखनीय रहे हैं। आपका जीवन सद्भावना, नैतिकता, समाज में सदाचार एवं अहिंसा जैसे सद्गुणों के प्रसार के लिए समर्पित रहा है। आचार्य श्री के नेतृत्व में उनके लाखों शिष्य एवं अनुयायी भी आज समाज में सेवा कार्य कर रहे हैं।

- मैं आपकी सेवा भावना और सन्मार्ग के लिए प्रेरित करती आपकी शिक्षाओं को नमस्कार करता हूँ। सर्वजनों से उनके अनुकरण का आग्रह करता हूँ।

- माननीयों, हमारा देश अध्यात्म के साथ-साथ हमेशा से ही शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केंद्र रहा है। हमारे जनमानस और संस्कृति में **वसुधैव कुटुंबकम** की भावना निहित रही है। जैन धर्म ने भारतीय संस्कृति की इसी वैश्विक और मानवीय भावना को पोषित किया है। प्रेम, करुणा, त्याग, तप और मनुष्यता जैन धर्म की अनमोल शिक्षाएं हैं। इन शिक्षाओं ने सारे संसार का मार्गदर्शन किया है। मानव और समाज की भलाई के पवित्र संदेशों को जन-जन तक ले जाकर आचार्य श्री ने मानवता और विश्व कल्याण में अभूतपूर्व भूमिका निभाई है।

- आचार्य महाश्रमण जी का आदर्श व्यक्तित्व और कृतित्व आज यहाँ उपस्थित जन समूह के लिए ही नहीं बल्कि पूरे समाज, पूरे राष्ट्र एवं पूरे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। उनका सान्निध्य हमें शांति एवं रचनात्मक ऊर्जा से भर देता है।

- मैं एक बार पुनः महाश्रमण जी तथा यहाँ उपस्थित सभी आचार्य एवं गुरुजन को नमन करता हूँ, उनका अभिनंदन करता हूँ।

जय जिनेन्द्र।